ब्रह्मा बाबा के कर्म रुपी १९ कदम

फ़ॉलो ब्रह्मा बाबा

१. सबको प्यार तथा सम्मान देकर आगे बढ़ाना:

बाबा सभीको स्वाभाविक, सर्व श्रेष्ठ, सम्पूर्ण और सच्चा प्यार और सम्मान देते | बाबा अति स्नेह और मुस्कान से मीठे बच्चे, नूरे रत्न, सर्विसएबुल, रूहानी बच्चे, लाडले बच्चे आदि शब्दों का प्रयोग करके उनमें उत्साह भर देते | जिस से हरेक महसूस करता की यह तो प्यार के सागर परमपिता ही मानव जाती के पिता ब्रह्मा के द्वारा इस अलौकिक स्नेह की वर्षा कर रहे हैं | इस सच्चे प्यार से वह आत्मा अभूतपूर्व शीतलता और ऊँच सौभाग्य का अनुभव करती | बाबा हर आत्मा में ईश्वरीय स्नेह पैदा करके उस से काम, क्रोध, लोभ आदि की बलि ले लेते | बाबा कहते, देखो बच्चे, क्या इस बाप के लिए इन दु:खकारी चीज़ों को भी नही छोड़ सकते ? जन्म जन्मान्तर आप विकारों का धंधा करते आए हो | बाप इस अन्तिम जन्म में आपको सुख शान्ति की विरासत देने आया है | तो क्या इस रहे हुए थोड़े से समय के लिए बाप की खातिर यह विकार नहीं छोड़ सकते ? बाबा के ऐसे मधुर वचनों को सुनकर हर कोई पवित्र बनने और बनानाके पुरुषार्थ में जुट जाता | बापदादा से उन्हे ऐसा प्यार और पालना मिलती जो वो सांसारिक सुखों को भुलाकर ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध में जुट जाते |

२. हर ईश्वरीय कार्य पर चलना और चलाना:

बाबा बच्चों को ज्ञान युक्त जीवन के नियम बताते हुए कहते, बच्चे, कायदे में ही फ़ायडा है | कायदे को छोड़ने से कार्य बिगड़ जाते हैं | कायदे पर ही ये सृष्टि कायम है, इसलिए, ईश्वरीय नियमों को कभी नही छोड़ना | साथ साथ बाबा कहते बच्चे, क़ानून को कभी अपने हाथ में मत लेना | यदि किसीसे आपका स्वभाव नही मिलता, अथवा

संस्कार टकराते हैं, अथवा किसिके बारे में आपको कोई शिकायत है, तो उसके विरुद्ध आप कोई कार्यवाही करने नही लग जाओ, उस पर हाथ ऊठाना, या अन्य किसी प्रकार से ऊसे दण्ड देने का यत्न करना गोया क़ानून को अपने हाथ में लेना | यदि किसिका कोई अवगुण अथवा दोष आपको दुःख देता है तो आप इधर उधर किसी को न बताकर, वातावरण को दोषित न करके, एक बाबा द्वारा शिव बाबा को बताओ तो शिव बाबा उसे स्वयं ही सावधानी दे देंगे |

एक कायदा बाबा यही भी बताया करते की जिस स्थान अथवा जिस कार्य अर्थ किसिको नियुक्त किया गया है, उस समय हरेक को चाहिए की उसे सम्मान और सहयोग दे | चाहे उस ड्युटी पर नियुक्त किया हुआ व्यक्ति आयु में छोटा हो और कम अनुभवी हो | बाबा कहते की जिसे नियुक्त किया गया है, उसे पूरा सहयोग देने ही दैवी मर्यादा है | उसकी कमियाँ देख कर उसका विरोध करना, उससे रूठ जाना अथवा स्वयं को उस कार्य से अलग हटा देना यह आसुरी मर्यादा है | बाबा कहते की यदि किसी में कोई कमी है, तो उस कमी को भरना आप का काम है | उसकी कमियों का वर्णन करते रहना यह महानता नहीं है, उन्हे भरने में ही महानता है |

३. हर एक के गुणों को देख उन्हें सेवा में लगाना:

बाबा हर बच्चे के गुण वर्णन कर उनमें उत्साह और खुशी भर देते और उसके उसी गुण को सेवा में लगाकर उसका कल्याण कर देते | बाबा कभी किसी बच्चे का अवगुण नहीं देखते | कोई सिलाई का काम जानता तो बाबा कहता यह ईश्वरीय यज्ञ के लिए बहुत ही सर्विसएबुल है | बाबा को ऐसी ही ज्ञान युक्त और पवित्र बच्चों के हाथ से सिले हुए कपड़े अच्छे लगते है | कोई बूढा या अनपढ़ होता तो बाबा उन्हे देख कहते जो लोग वृद्ध है वो बहुत सर्विस कर सकते हैं क्यों की वह अनुभवी हैं | यदि वे ईश्वरीय ज्ञान को अपने अनुभव सहित दूसरों को सुनाएँगे, तो सुनने वालों को वह बात जाँच जाएँगी | अनपढ़ को देख बाबा कहते बच्चे आप पढ़े हुए नही हो तो क्या हुआ! केवल अल्लिफ़ और बे ये दो बातें ही जाननी है | ठीक इसी तरह बाबा बच्चों को, निर्धनो को, हर वर्ग तथा हर आयु के व्यक्तियों को, आत्मिक दृष्टि से देखते हुए उन्हे

लोक कल्याण के किसी न किसी कार्य में लगा देते | जिसमे जो गुण होता बाबा उसके उस गुण को यज्ञ सेवार्थ प्रयोग करते जिससे उस व्यक्ति को अपने संस्कारों को परिवर्तन करने में ईश्वरीय बल मिलता |

४. स्वयं मेहनत करके दिखाना:

बाबा ईश्वरीय सेवार्थ अथवा लोक कल्याणार्थ तन-मन-धन समर्पण करने के बाद वृद्ध शरीर होते हुए भी निरन्तर सेवा में लगे रहते हैं | सेवा-सेवा-सेवा, बस सेवा के लिए और मनुष्यात्माओं को सुख देने के लिए ही उनके विचार चलते | दिन भर में १८ घण्टे से भी अधिक वह कार्य करते. ख़ान, पान रहन, सहन और आराम की सुविधा का भी ख्याल नहीं रखते | बाबा कहते, बच्चे यदि मैं शरीर से यज्ञ की सेवा नहीं करूँगा, तो मुझे निरोगी और कंचन काया कैसे मिलेगी? बच्चे सर्विस करनेकी तो लालसा होनी चाहिए | दधीची ऋषि के समान इस यज्ञ में अपनी हड्डियाँ भी दे देनी चाहिए तभी तो यह शरीर पावन बनेगा | इस यज्ञ की जितनी जो सेवा करेगा उतना उसको बल मिलेगा और उसकी आयु भी लम्बी होगी. बाबा ने हम बच्चों को यही नारा दियाकी ईश्वरीय सेवा करना ही सौभाग्य बनाना है |

५. हर एक को खुशी में लाना और हल्का करना:

बाबा सदा स्वयं खुशी में रहते और सदा ऐसी ही बातें सुनाते की कोई भी मनुष्य कितना भी अशान्त क्यों न हो, चाहे कितनी भी उलझनों में पड़ा हुआ हो, बाबा की मधुर मुस्कान को देखते ही उसकी उदासी और चिन्ता भाग जाती | खुशी का पारा चढ़ जाता | किसी ने भी बाबा के चेहरे पर चिंता या उदासी रेखा नहीं देखी| बाबा के आस पास वातावरण में भी सदा खुशी की लहरें अथवा खुशी की खुश्बू फैली रहती | बाबा सदा बच्चों को खुशी और उल्हस में लाते रहते और कहते बच्चे, माया के विघ्न तो बहुत आएँगे, तूफान बहुत आएँगे, परन्तु घभराना मत और हिम्मत नहीं हारना | आप विजयी रत्न हो, विजय का तिलक तो आपके माथे पर लगा ही हुआ है |

६. आलसी और अलबेलेपन से अतीत तथा निद्राजीत:

कहावत है की सच्चा योगी वह है जो निद्राजीत है. बाबा की जीवन में आलसी का नामोनिशान नहीं था | शरीर की वृधवस्था होने पर भी बाबा दिन-रात मनुष्य आत्माओं के संस्कारों को परिवर्तन करने के कार्य में लगे रहते |बाबा के जीवन में थकावट के चिन्ह कभी दिखाई नही दिए | कभी उन्होने आलसी वश किसी कार्य को स्थगित नहीं किया | जो काम सामने आया, उन्होने उसे कभी अधूरे मन से, गफलत या अलबेलेपन से नहीं किया, बल्कि जी-जान से कर्मठ होकर, उत्साहपूर्वक मन लगाकर उसे पूरा किया | कितने भी विघ्न आए, चाहे वह कार्य शूरू में असंभव-सा प्रतीत हुआ, सभी परिस्थितियां प्रतिकूल होने पर उन्होने कार्य को सम्पन्न करने की कोई न कोई राह निकाल ली | यह उनके ओज, तेज, मनोबल, दृढ़ता और प्रतिज्ञा का परिचायक है |

७. मैं पन का सम्पूर्ण त्याग:

पिताश्री ने मैं पन का सम्पूर्ण त्याग कर नमंबरवन् को प्राप्त किया | त्याग जो अनेक वत्सों ने किया परन्तु वर्णन तो दूर, बाबा को तो अपने त्याग का भी एहसास नहीं था | बाबा कहा करते थे की मुझे तो कौडियों के बदले स्वर्ग की बादशाही मिल गयी | बाबा अपना स्वरूप इतना साधारण रखते थे जो कोई समझ भी न पाए की ये प्रजापिता ब्रह्मा हैं परंतु उनकी शालीनता व महानता प्रत्यक्ष उनके होवनहार विश्व महाराजन की परछाई फेंकती थी | मान-शान की बात तो उनसे कोसों दूर थी|

बाबा अपने लिए कुछ भी नही रखते थे| कई बार बच्चे कहते, बाबा इस टूटे फूटे मकान को छोड़कर आप नये मकान में रहो, तो बाबा कहते, बच्चे, शिव बाबा तो पुराने तन में, पुरानी दुनिया में आया है, बाबा तो पुराने मकान में ही रहेंगे | नये मकान बच्चों के लिए हैं | ऐसा त्याग और कोई हो नहीं सकता | मैं पन के त्याग के कारण ही बाबा सदा निश्चिंत और अड़ोल थे|

८. ब्रह्मा बाबा सर्वश्रेष्ठ योगी:

बाबा बात करते-करते बीच में शरीर से गुम हो जाते अर्थात अशरीरी हो जाते थे |जैसे की बातें सुनते हुए भी निरलिप्त हैं |न तो बाबा विस्तार से सेवा समाचार सुनते और नाही विस्तार से उत्तर देते |वाणी में आते भी बाबा वाणी से परे रहते थे और अपने दो महवाक्यों से ही हमे भी वाणी से परे ऊड़ा ले जाते थे |अंतिम दिनों में तो बाबा के कमरे में सन्नाटा ही सन्नाटा नज़र आता था |बाबा बहुत धीरे धीरे योग्युक्त होकर भोजन ग्रहण करते और बार-बार याद दिलाते बच्ची तुम किसे भोजन खिला रही हो! बाबा स्नान करते समय कहते बच्ची मैं तो शिव पर लोटी चढ़ा रहा हूँ. इस प्रकार बाबा ने हर कर्म में योग को मनोरंजन का साधन बना लिया था |बाबा का हर कर्म योगयुक्त था |पत्र लिखते, सुनते, बच्चों से मिलते हुए बाबा शिव बाबा के साथ रहते थे |बाबा सदा शिव बाबा से बात करते रहते |जिस पर बाबा की दृष्टि पड जाती वो शरीर से न्यारा हो जाता |बाबा के सामने आते ही किसी को भी ज़्यादा बात करने की इच्छा नही होती, उसे स्वतः ही सर्व समस्याओं का समाधान मिल जाता था|

९ . सदा निश्चिंत और अचल स्थिति:

१९५६ में बाबा को अनायास ही एक शारीरीक़ व्याधि ने आ घेरा! अबू के स्थानीय डाक्टर्स ने बम्बई में आपरेशन कराने की सलाह दी और गंभीर मुख मुद्रा बनाकर चिंता प्रगट करते हुए कहा की इस अधेड़ आयु में एसे आपरेशन बहुत ही कम लोगो के सफल होते हैं |डाक्टर की एसी बातें सुनकर यज्ञ वत्सो का मन कुछ भर आया |परन्तु बाबा के चमकते हुए चेहरे पर बीमारी अथवा कष्ट के कोई चिन्ह नही थे |बाबा अपनी निश्चिंत और अचल स्थिति में थे |बाबा ने जब बच्चों के चेहरे की रेखायेन गंभीर वा चिंता की देखते तो मधुर आवाज़ में कहते बच्चे, मैं तो ठीक हूँ, हाँ बिककूल ठीक हूँ | ये तो आप सब जानते ही हो यह पुराना शरीर है, पुरानी चीज़ को कई चात्तियां लगाकर ही चलाया जाता है |बाकी तो बाबा को कुछ भी नही हुआ है |फ़िक्र से फारिग रहो बच्चे |बाबा की यह स्थिति सूक्ष्म रूप में सभी वत्सो को यह प्रेरणा दे रही थी की माया के अतिरिक्त काया भी यदि कठिन परीक्षा आए तो देह से न्यारा होकर आत्मिक स्थिति में रहने तथा परमात्म स्मृति में स्थित रहने का अभ्यास एसा परिपक्व होना चाहिए वह रिंचक मात्र भी हमारी स्थिति को बिगाड़ न पाये|

१०. सदा कापारी बेहद की खुशी:

बाबा को सदा कापारी खुशी में देखा | बाबा कहते बच्चों, जब किसी के घर शादी का मोका होता है, तो उनके घर में ढोल या बैंड बजते हैं | बाबा तो कई बार सोचता है की यहाँ २४ ही घण्टे खुशी के नगाड़े बजते रहें, क्योंकि यहाँ आत्माओं की अमरनाथ परमात्मा शिव से सगाई अथवा शादी हो रही है | इस से बढ़कर अन्य तो कोई खुशी की बात हो नही सकती | इस प्रकार बाबा खुशी और उत्साह के साकार पावर हाउस थे | उनमे ईश्वरीय संदेश देनेक उत्साह सदा बना रहता | शिवबाबा के अवतरण एवं मिलन की खुशी बाबा को इतनी पाराकाश्ठा की रहती की बाबा के मन वचन और कर्मों में उस खुशी का इतना प्रभाव होता की अशान्त से अशान्त आत्मा भी बाबा के निकटता से अपार खुशी महसूस करती | बाबा कहते बच्चे, तुम्हे तो एडी से चोटी तक खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए, अथवा कपारी खुशी होनी चाहिए, जो स्वयं त्रिकालदर्शी, त्रिलोकिनाथ, सर्वशक्तिवान शिवबाबा तुम्हे मिला है और वो २५०० वर्षों के लिए स्वर्गीय राज्य भाग्य का अधिकारी बना रहे हैं |

११. सागर समान गंभीर:

कराची में जब बाबा के साथ बच्चे सागर के किनारे जाकर बैठते तो बाबा मधुर और स्नेह युक्त शब्दों में कहते, बच्चे, सागर की लहरें देख रहे हो? देखो सागर की लहरें कैसे आप बच्चों के पास तक आती है और फिर वापस चली जाती हैं | आप भी ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा के बच्चे हो, आप इस सागर से गुण ग्रहण करो की आप के मन में कभी भी माया की लहर उठें तो आप भी ऐसे ही वापस लौटा दिया करो | फिर बाबा कहते बच्चे, देखो, लोग सागर में कचरा अथवा कूड़ा डालते हैं तो वह सागर के अंदर नही जाता बल्कि लहरों के साथ बाहर आकर एक किनारे पर लग जाता है | तो इस सागर की तरह आपका भी स्वभाव होना चाहिए | आप बच्चों के मन में अंदर कोई कीचड़ा नहीं ठहरना चाहिए | जैसे सागर में जब गोताखोर नीचे जाते हैं, तो वहाँ से हीरे मोती रत्न आदि ले आते हैं, ऐसे आप बच्चे भी विचार सागर मंथन करो | ज्ञान की गहराई मे जाओ तो बहुत ही अनमोल रत्न, हीरे मोती मिलेंगे | देखो, सागर में उपर

भले कितनी भी लहरें हैं, परन्तु नीचे वो शान्त होता है | आप भी ऐसे शान्त और धैर्यवत हो जाओ | सागर के किनारे पड़े सालिगरामों की ओर इशारा करते हुए बाबा कहते यह देखो पानी की लहरों और छीटों से घिस घिस कर पूजनीय सालिगराम हो गये हैं | ऐसे ही आप भी कठिनाइयों को सहन करेंगे और ज्ञान सागर की लहरों में लहराएँगे तो एक दिन एसे ही साफ़ और पूजनीय अर्थात पावन बन जाएँगे |

१२. सादगी और सदव्यवहार:

बाबा सादगी के एक उत्तम उदाहरण थे | वे एक छोटेसे कमरे में रहते थे जो पुराने ढंग का था और उसकी छत टीन के चादरों से बनी हुई थी | वही कमरा उनके विश्राम का स्थान, भोजन गृह और छोटा कार्यालय तथा बच्चों को मिलने का स्थान था | बिस्तर पर सफेद चादरें बिछी हुई, दीवारों पर सफेद चूना...न कमरे की कोई विशेष साज सज्जा थी ना कोई बाहरी बनावट | उस कमरे में बैठकर सेवा मूर्ति बाबा ने कितनी आत्माओं को एक नया जीवन प्रदान किया | कितनों ने वहाँ बैठकर प्रभु मिलन का सुख पाया और ईश्वर अर्पित होने का संकल्प लिया | न बाबा के तन पर कोई बनावटी श्रिन्गार, न बाबा के कमरे में | बाबा कहते, बच्चे, इस ईश्वरीय सेवा में किसी ने एक पैसा भी अर्पित किया है, उसका वह पैसा भी एक लाख रुपये से अधिक मूल्यवान है और वह मनुशात्माओं को पावन बनाने तथा उनको शांति देनेकि सेवा के लिए है | उसे हम अपने सुख भोग के लिए खर्च नहीं कर सकते, वह अमानत में ख्यानत होगी | उन्होने कभी किसिको व्यक्तिगत रूप से फटकार, डाँट-डपट नहीं दी, बल्कि वे सदा सभी से सुकोमल, सुमधुर, सदभावना पूर्ण और सम्मान सहित शब्दों से वार्ता करते | उनके मीठे बोल, उनकी मीठी दृष्टि, उनके मधुर व्यवहार, ज्ञान की मीठी बातें और मीठी मुस्कान के कारण उनके निवास का नाम पड़ा मधुबन तपोवन.

१३. स्नेह, संरक्षण और सहायता देने में निपुण:

एक मानव आत्मा होते भी वे अन्य सभी मनुष्यों से भिन्न थे | उनमें पीतापन का प्रेम था | जैसे पिता अपने बच्चों को अच्छा पद प्राप्त करते देख हर्षित होता है, वैसे ही हर्ष उन्हे होता था | योग्य पिता की सदा यही इच्छा रहती है की उसके सभी बच्चे सुयोग्य

हों और सदा सुखी हों |एसे ही भावना बाबा की अन्य सभी मानव आत्माओं के प्रति रहती थी |वे सदा कहते अमुक वत्स विवाहित होने पर भी पवित्र हैं, अतः वे सन्यासी से भी आगे हैं |कोई बच्चा अच्छी तरह ईश्वरीय सेवा करता तो बाबा कहते यह बच्चा बाप के दिलतख्तनशीन है |यह तो बाबा से भी अधिक सेवा करता है |यह बच्चा अन्य आत्माओं को ज्ञान समझाने में बाबा से भी अधिक होशियार है |इस तरह दूसरी आत्माओं को तीव्र पुरूशार्थ करते देखकर, अथवा जीवन में सफल होते देखकर वे खुश होते थे |वे प्रायः वत्सोन को पत्र लिखकर उनका हर्ष, उल्हास उत्साह और उमंग बढ़ाते रहते थे और उन्हे मार्ग दर्शन देकर माया के कष्टों से इनका संरक्षण करते थे |बाबा ने हर बच्चे को सहयोग और संरक्षण देकर उनका स्नेह शिवबाबा के साथ जोड़ा और अलौकिक पिता का कर्तव्य निभाते हुए उन्होने अलौकिक अर्थात आध्यात्मिक वत्स का नाता निभाने का पाठ पढ़ाया |

१४. सभी में योग्यता भरने की कला:

वरदान देकर योग्य बनाना और ईश्वरीय सेवा में जूटाना तो ब्रह्मा बाबा की विशेष कला थी |किसी को उन्हों ने भवन कला में ऐसा निपुण बना दिया की उसने इतने बड़े पाण्डव भवन, योग भवन आदि का निर्माण करा डाला तो किसी अन्य को हिसाब-किताब की कला सिखाकर अथवा शीघ्र नोट लेने का वरदान देकर, लिखाधारिकारी अथवा शीघ्र लिपित बना दिया |जो पहले किसी स्कूल या कॉलेज में उस विद्या को नही पढ़े थे उन्हे पढ़े लिखों से भी अधिक कुशल और अनुभवी बना दिया, यह बाबा की कमाल थी |आज वे वत्स इतने अलौकिक रूप से इतनी विशाल सेवा करने में तत्पर हैं की उनके कार्य कुशल कलाकृत्य को देखकर लोक आश्चयान्वित होते हैं की किसी कलह कलेश और झगड़े के बिना वे इतना विशाल कार्य करा राहे हैं |उनकी स्थाई मुस्कान, उनके नेत्रों में शिव बाबा की याद की झलक, उनके महा वाकयाओं में माधुर्य और रूहानियत, उनके हर कदम में लोग संग्रह, इतना महान होने पर भी उनकी नम्रता, विकट परिस्थितियां सामने आने पर भी उनकी निरभिक्ता एवं निशचिंतता , उनकी सात्विकता, उनका संतोष और उनका झर झर करता हुआ प्रेम, उनकी अमिट प्रभु प्रीति और अटल निश्चय, एसा उनका बहुमुखी व्यक्तित्व अव्दितीय था |

१५. देहातीत बनानेवाली शक्तिशाली दृष्टि:

बाबा के नेत्रों की ओर देखने से अपने शरीर को भुलनेके लिए कुछ भी पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता और एसे लगता की प्रकाश की गति से आत्मा अशरीरी होकर कहीं दूर दूर आकाश से पार, ज्योति के देश में जा रही है | यह अनुभव जितना भी सूक्ष्म होता था, उतना ही गहरा और ऊँच पराकाष्ठा वाला होता था, जो बाद में भी आत्मा की स्थिति को अवयक्त बनाए रखता था | इस से स्पष्ट समझा जा सकता है की बाबा की योग स्थिति कितनी परिपक्व, शक्तिशाली एवं गहन रही होगी और स्वयं कितने देहातीत एवं अवयक्त अवस्था में रहते होंगे |

१६ . बाबा के जीवन में ज्ञान और प्रेम का अदभूत मेल:

बाबा में तो ज्ञान की अथाह गहराई थी ही तभी तो उनके जीवन में ज्ञान के एक अजीब मस्ती झलकती थी और तभी वह सदा कहते थे की यह ज्ञान अनमोल और अविनाशी रत्न हैं | वे जिस ज्ञान की बात कहते वह ज्ञान प्रेम पूर्ण था | ज्ञान और प्रेम का उनके जीवन में एसा ताल-मेल था की दोनों को अलग-अलग बताना असंभवसा था | जो उनके सम्पर्क में आए, उनमे से कोई तो कहेगा की उनके जीवन में प्रेम अधिक था और अन्य कोई कहेगा की प्रारम्भ में प्रेम का आश्रय देकर ज्ञान की गहराई में ले जाने की कोशिश करते | वास्तव में यह देखने वालों की दृष्टि का अंतर है और अपनी अपनी जगह दोनों ठीक भी हैं | वास्तव में बाबा के ज्ञान बोल प्रेम के बिना होते ही नही थे और उनके प्रेम के बोल में सदा ज्ञान भरा रहता था और प्रेम तथा ज्ञान दोनों का लक्ष्य मनुष्यात्मा को पवित्र और योगी बनाना ही था |

१७. हर परिस्थिति में बाबा की याद:

बाबा का शिव बाबा से ऐसा ज्ञान युक्त प्यार था की वे हर स्थिति को निमित्त बनाकर उनकी याद में रहते | यदि कोई समस्या सामने आती, तो कहते शिव बाबा को याद करो तभी पुरुषार्थ में पूर्णता आएगी | लौकिक स्थूल परिस्थितिओं को भी बाबा शिव बाबा की याद के निमित्त बना लेते | बस "बाबा बाबा" मीठे बाबा ही की याद उनके मन में बनी रहती | जैसे, रात्रि को दो घनिष्ट दोस्त , छोटे बालक, सोने के लिए

अपने अपने घर चले जाते हैं और प्रात: होते ही फिर एक दूसरे को उसके घर से बुलाकर पढ़ना खेलना आदि शूरू कर देते हैं, ऐसे ही बाबा, शिवबाबा के बिना रह ही नहीं सकते | वे तो पूरी रात एक दूसरे से जूदा नहीं होते, बाबा कहते मैं तो बाबा के साथ ही सोता हूँ | यह प्यार और याद का कितना गहरा सम्बन्ध है!

१८. जीवन में अदभुत संतुलन:

बाबा के जीवन में हर प्रकार का संतुलन था | वे देही - अभिमानी बनने पर तो पूरा ज़ोर देते ही थे, परन्तु, देह के स्वास्थ्य और उसकी संभाल की अवहेलना करना नहीं कहते थे | हाँ, वे कहते थे की बार बार शारीरिक बीमारी की चर्चा करके अपने श्वास व्यर्थ नहीं गवाने चाहिए, क्यों की, आज जब की प्रकृति तमोप्रधान है, और हमने अज्ञान काल में विकर्म भी किए हैं, तो रोग और व्याधियाँ आएँगी ही | अतः उन्ही में मन बुद्धि लगाए रखनेसए तो हम शिवबाबा कि याद के लिए समय निकाल ही नहीं पाएँगे | अतः वे कहते, बच्चे, दवा और दुआ दोनों से काम लो और सेवा की अवस्था में भी योग को न भूलो वरना देह अभिमान का संस्कार पक्का होता जाएगा | इस पर भी वह कहते की यह शरीर मूल्यवान है अतः इसे ठीक रखो ताकि इस द्वारा ईश्वरीय सेवा भी कर सको और योग में भी विघ्न न पड़े | बाबा अच्छा भोजन खाने के लिए भी कहते, साथ साथ यह भी राय देते की अपने पेट पालन के लिए अधिक खर्चा न करो | आसक्तियों से मुक्त रहो | वे बहुत प्यार से टोली खिलाते, पिकनिक कराते, परंतु साथ साथ बाज़ार के ख़ान पान से मन हटा देते और मन की तृष्णाओं को भी शान्त कर देते | वे अथक रीति से सेवा करने तथा कर्म करने में प्रवृत करते, परंतु वे उतना ही ध्यान अपनी मनोस्थिति और अपने निज़ी पुरुषार्थ पर दिलाते, तथा अलबेलेपन से होने वाले नुकसान के प्रति भी सावधान कराते |

१९. आत्मिक दृष्टि और सर्व के शुभ चिंतक:

अनेकानेक गुणो में से साकार बाबा में एक मुख्य गुण जो की उनके व्यक्तित्व में सदा झलकता रहता, उनके चारों ओर पवित्रता बिखेरते रहता, वायुमंडल को शुद्ध करता रहता और लोगों के जीवन को पलट देता, वह था आत्मिक दृष्टि कोण बाबा सदा

आत्मिक स्थिति में रहते हुए सब देहो में आत्मा को ही देखते |बाबा की क्लास में छोटे बच्चे भी बैठे होते, बूढ़े भी उपस्थित होते, ग्रामीण भी होते और बड़े बड़े नगरों में ठाठ बाठ रहनेवाले व्यक्ति भी विराजमान होते, परन्तु बाबा सबको आत्मिक दृष्टि से देखते |बाबा के दिल में कभी ऊँच नीच, ग़रीब साहूकार की भावना नहीं रही |सबको समान दृष्टि से देखा, समान प्यार और सत्कार दिया.

बाबा किसिका अशुभ अथवा अमंगल नहीं सोचते |दूसरों को भी वह सदा शिक्षा देते की न किसी के अकल्याण की बात सोचो और न कभी मुखसे अशुभ बोलो |बाबा इतने विशाल ह्रदय वाले शुभचिंतक थे की जिन माताओं कन्याओं को उनके लौकिक सम्बन्धी ज्ञान में आने से रोकते |अपकार, अनर्थ, न्याय और अत्याचार का व्यवहार करते उनके लिए सदा बाबा कहते बच्चे, उनकी ज्ञान योग से सेवा करके उनका कल्याण करने का पुरुषार्थ करते रहो |बच्चे, आप उनसे घृणा नहीं करो |आप सदा उनके प्रति शुभ सोचो |सभी के शुभचिंतक बन बाबा रात-रात भर नींद त्याग कर भी उन्हे पावन बनाने तथा योग्युक्त करने के लिए, उन्हे प्रभु परिचय देनेकि योजनाएँ बनाते रहते |

ऐसे थे हमारे मीठे-मीठे प्यारे साकार बाबा जिनकी विशेषताओं का वर्णन करना तो जैसे सूर्य को दीपक दिखाना है |हम ब्रह्मा वत्सो को उनके कदमों पर कदम रखते सबके लिए दृष्टांत रूप बनना है |

अच्छा- ॐ शान्ति !

BRAHMA BA□A KE □ARM□OOPI 19 □ADAM

FALOW BRAHMA BA□A

1 . Sabko Pyaar tatha sammaan dekar aage badhaana:

Baba sabhiko swabhaavik, sarv shreshth, sampoorn aur sachcha pyaar aur samman dete. Baba ati sneh aur muskaan se meethe bachche, noore ratn, sarvisebul, ruhaani bachche, ladle bachche aadi shabdon ka prayog karke unmen utsah bhar dete. Jis se harek mahsoos karta ki yah to pyaar ke sagar parampita hi maanav jaati ke pita brahma ke dwara is alokik sneh ki varsha kar rahe hain. Is sachche pyar se vah atma abhootpoorv sheetalta aur oonch saubhaagy ka anubhav karti. Baba har atma men ishwariy sneh paida karke us se kaam, krodh, lobh adi ki bali le lete. Baba kehte, dekho bachche, kya is baap ke liye in duhkh kaari cheezon ko bhi nahi chhod sakte.Janm janmaantar aap vikaaron ka dhandha karte aaye ho. Baap is antim janm men aapko sukh shanti ki viraasat dene aaya hai.To kya is rahe hue thode se samay ke liye baap ki khaatir yah vikaar nahin chhod sakte? Baba ke aise madhur vachanon ko sunkar har koi pavitr ban ne aur banana ke purushaarth men jut jata. Bapdada se unhe aisa pyar aur paalna milti jo vo saansaarik sukhon ko bhulaakar ishwariiy parivaar ke sambandh men jut jaate.

2. Har Ishwariiy kaary par chalna aur chalaana:

Baba bachchon ko gyan yukt jeewan ke niyam bataate hue kahate, bachche, kaayde men hi faayda hai. Kaayde ko chhodne se kaary bigad jaate hain. Kaayde par hi ye srishti kaayam hai, isliye, iishwariiy niyamon ko kabhi nahi chhodna. Saath saath baba kahte bachche, kanoon ko kabhi apne haath men mat lena. Yadi kisise aapka swabhaav nahi milta, athva sanskaar takraate hain, athva kisike baare men aapko koi shikaayat hai, to uske viruddh aap koi kaary vaahi karne nahi lag jaao, us par haath oothaana, ya any kisi prakaar se oose dand deneka yatn karna goya kanoon ko apne haath men lena. Yadi kisika koi avgu n athva dosh aapko duhkh deta hai to aap idhar udhar kisi ko n

bataakar, vaataavaran ko doshit n karke, ek Baba dwara Shiv Baba ko bataao to Shiv Baba use swayam hi saavdhaani de denge.

Ek kaayda Baba yahi bhi bataaya karte ki jis sthaan athva jis kaary arth kisiko niyukt kiya gaya hai, us samay harek ko chaahiye ki use samman aur sahyog de. Chahe us dyuti par niyukt kiya hua vyakti aayu men chhota ho aur kam anubhavi ho. Baba kahte ki jise niyukt kiya gaya hai, use poora sahyog dene hi daivy maryada hai. Uski kamiyaan dekh kar uska virodh karna, us se rooth jaana athva swayam ko us kaary se alag hata dena yah aasuri maryaada hai. Baba kahte ki yadi kisi men koi kami hai, to us kami ko bharna aap ka kaam hai. Uski kamiyon ka varnan karte rahna yah mahaanta nahi hai, unhe bharne men hi mahaanta hai.

3. Har ek ke gun non ko dekh unhen seva men lagaane:

Baba har bachche ke gu n varnan kar unmen utsaah aur khushi bhar dete aur uske usi gu n ko seva men lagaakar uska kalyaan kar dete. Baba kabhi kisi bachche ka avgu n nahin dekhte. Koi silaai ka kaam jaanta to Baba kahta yah ishwariy yagy ke liye bahut hi sarvis ebul hai. Baba ko aisi hi gyan yukt aur pavitr bachchon ke haath se sile hue kapde achche lagte hai. Koi Budhha ya anpadh hota to Baba unhe dekh kahte jo log vriddh hai vo bahut sarvis kar sakte hain kyon ki vah anubhavi hain. Yadi ve ishwariy gyan ko apne anubhav sahit doosron ko sunaayenge, to sun ne walon ko vah baat janch jaayengi. Anpadh ko dekh Baba kahte bachche aap padhe hue nahi ho to kya hua! Keval allif aur be ye do baaten hi jaan ni hai. Thik isi tarah baba bachchon ko, nirdhanon ko, har varg tatha har ayu ke vyaktiyon ko, aatmic drishti se dekhte hue unhe lok kalyaan ke kisi n kisi kaary men laga dete. Jisme jo g u n hota baba uske us gu n ko ko yagy sevarth prayog karte jisse us vyakti ko apne sanskaaron ko parivartan karne men iswariy bl milta.

4. Swayam mehnat karke dikhaana:

Baba ishwariy sevaarth athva lok kalyaanaarth tn-mn-dhan- samarpan karne ke baad vriddh sharir hote hue bhi nirantar seva men lage rahte hain. Seva-seva-seva, bas seva ke liye aur manushyaatmaaon ko sukh dene ke liye hi unke vichaar chalte. Din bharmen 18 ghante se bhi adhik vah kaary karte. Khaan, paan rahan, sahan aur aaraam ki suvidha ka bhi khyaal nahin rakhte. Baba kahte, bachche yadi main shareer se yagna ki seva nahin karunga, to mujhe nirogi aur kanchan kaaya kaise milegi? Bachche sarvis karneki to laalsa honi chahiye. Dadhichi rishi ke samaan is yagna men apni haddiyan bhi de deni chahiye tabhi to yah shareer paavan banega. Is yagna ki jitni jo seva karega utna usko bl milega aur uski aayu bhi lambi hogi. Baba ne ham bachchon ko yahi naara diyaki ishwariy seva karna hi saubhaagy banaana hai.

5. Har ek ko khushi men laana aur halka karna:

Baba sada swayam khushi men rahte aur sada aisi hi baaten sunaate ki koi bhi manushy kitna bhi ashaant kyon n ho, chaahe kitni bhi uljhanon men pada hua ho, baba ki madhur muskaan ko dekhte hi uski udaasi aur chinta bhaag jaati. Khushi ka paara chadh jata. Kisi ne bhi baba ke chehare par chinta ya udaasi rekha nahin dekhi. Baba ke aas paas vataavaran men bhi sada khushi ki laharen athva khushi ki khushboo faili rahati. Baba sada bachchon ko khushi aur ulhas men laate rahte aur kahte bachche, maya ke vighn to bahut aayenge, toofaan bahut aayenge, parantu ghbhraana mat aur himmat nahin haarna. Aap vijayi ratn ho, vijay ka tilak to aapke maathe par lagaa hi hua hai.

6. Aalasy aur albelepan se ateet tatha nidra jeet:

Kahavat hai ki sachcha yogi vah hai jo nidra jeet hai. Baba ki jeewan men aalasy ka naamo nishaan nahin tha. Shareer ki vridhhavstha hone par bhi baba din-raat manushy atmaaon ke sanskaaron ko parivartan karne ke kaary men lage rahte.baba ke jeewan men thakaavat ke chinh kabhi dikhaai nahi diye. Kabhi unhone aalasy vash kisi kaary ko sthagit nahin kiya. Jo kaam saamne aaya, unhone use kabhi adhoore mn se, gaflat ya albelepan se nahin

kiya, balki jee-jaan se karmath hokar, utsaahpoorvak mn lagaakar use poora kiya. Kitne bhi vighn aaye, chahe vah kaarty shooru men asambhav-sa pratit hua, sabhi parishthiyan pratikool hone par unhone kaary ko sampann karne ki koi n koi raah nikaal li. Yah unke oj, tej, manobal, dridhta aur pratigna ka pari chaayak hai.

7. Main pan ka sampoorn tyaag:

Pitashri ji ne main pan ka sampoorn tyaag kar namnbar vn ko prapt kiya. Tyaag jo anek vatson ne kiya parantu varnan to door, baba ko to apne tyag ka bhi ehsaas nahin tha. Baba kaha karte the ki mujhe to koidiyon ke badle swarg ki badshaahi mil gayi. Baba apna swaroop itna sadhaaran rakhte the jo koi samajh bhi n paaye ki ye prajapita brahma hain parantu unki shaalinta v mahaanta pratyaksh unke hovanhaar vishv mahaaraajan ki parchhaaii fenkti thi. Maan-shaan ki baat to unse koson door thi.

Baba apne liye kuch bhi nahi rakhte the. Kai baar bachche kahte, baba is toote foote makaan ko chhodkar aap naye makaan men raho, to baba kahte, bachche, Shiv baba to puraane tan men, puraani duniya men aaya hai, baba to puraane makaan men hi rahenge. Naye makaan bachchon ke liye hain. Aisa tyaag aur koi ho nahin sakta. Main pan ke tyaag ke kaaran hi baba sada nishchint aur adol the.

8. Brahma Baba sarvshreshth yogi:

Baba baat karte-karte beech men shareer se gum ho jaate arthaarth ashareeree ho jate the. Jaise ki baaten sunte hue bhi nirlipt hain. N to baba vistaar se seva samaachaar sunte aur naahi vistaar se uttar dete. Vaani men aate bhi baba vaani se pare rahte the aur apne do mahavaakyon se se hi hame bhi vaani se pare ooda le jaate the.Antim dinon men to baba ke kamre men sannta hi sannata nazar aata tha. Baba bahut dheere dheere yogyukt hokar bhojan grahan karte aur baar-baar yaad dilaate bachchi tum kise bhojan khila rahi ho! Baba snaan karte samay kahte bachchi main to Shiv par loti chadha raha hun. Is prakaar baba ne har karm men yog ko manoranjan ka saadhan bana liya tha. Baba ka hark arm yog yukt tha. Patr likhte, sunte, bachchon se milte hue baba Shiv Baba ke saath rahte the. Baba sada Shiv Baba se baat karte rahte. Jis par baba ki drishti pad jaati vo shareer se nyaara

ho jata. Baba ke saamne aate hi kisi ko bhi jyaada baat karne ki ichcha nahi hoti, use swatah hi sarv samasyaaon ka samaadhaan mil jata tha.

9. Sada nishchint aur achal sthiti:

1956 men baba ko anaayaas hi ek shaarireek vyaadhi ne aa ghera! Abu ke sthaaniy daaktars ne bambai men aapreshan karaane ki salaah di aur gambhir mukh mudra banaakar chinta pragat karte hue kaha ki is adhed aayu men eise aapreshan bahut hi kam logoon ke safal hote hain. Daaktar ki eisi baaten sunkar yagya vatson ka man kuch bhar aaya. Parantu baba ke chamakte hue chehare par beemaari athva kasht ke koi chinh nahi the. Baba apni nishchint aur achal sthiti men the. Baba ne jab bachchon ke chehare ki rekhaayen gambhir va chinta ki dekhte to madhur awaaz men kahte bachche, main to thik hun, haan bikkul thik hun. Ye to aap sab jaante hi ho yah puraana shareer hai, puraani cheez ko kai chattiyan lagaakar hi chalaaya jata hai. Baki to baba ko kuch bhi nahi hua hai. Fikr se faarig raho bachche. Baba ki yah sthiti sookshm roop men sabhi vatson ko yah prerna de rahi thi ki maya ke atirikt kaaya bhi yadi kathin pariksha aaye to deh se nyaara hokar aatmik sthiti men rahane tatha parmaatm smriti men sthit rahane ka abhyaas eisa paripakv hona chahiye vah rinchak maatr bhi hamaari sthiti ko bigaad n paaye.

10. Sada Kaapaari behad ki khushi:

Baba ko sada kaapaari khushi men dekha. Baba kahte bachchon, jab kisi ke ghar shaadi ka moka hota hai, to unke ghar men dhol ya baind bajte hain. Baba to kai baar sochta hai ki yahaan 24 hi ghante khushi ke nagaade bajte rahen, kyonki yahaan atmaaon ki amarnath parmatama shiv se sagaai athva shaadi ho rahi hai. Is se badhkar an y to koi khushi ki baat ho nahi sakti. Is prakaar baba khushi aur utsaah ke saakaar paavar haaus the. Unme ishwariy sandesh deneka utsaah sada bana rahta. Shivbaba ke avtaran evam Milan ki khushi baba ko itni paraa kaashtha ki rahti ki baba ke man vachan aur karmon men us khushi ka itna prabhaav hota ki ashaant se ashaant atma bhi baba ke nikat ta se apaar khushi mahsoos karti. Baba kahte bachche, tumhe to edi se choti tak khushi ka paara chadhaa rahna chahiye, athvaa kapari khushi hone chahiye, jo swayam trikaal darshi, trilokinath, sarv shakti vaan shiv baba

tumhe mila hai aur vo 2500 varshon ke liye swargiy rajy bhaagy ka adhikaari bana rahe hain.

11. Saagar samaan gambhir:

Karaachi men jab baba ke saath bachche sagar ke kinaare jaakar baith te to baba madhur aur sneh yukt shabdon men kahte, bachche, sagar ki lahren dekh rahe ho? Dekho sagar ki lahren kaise aap bachhcon ke paas tak aati hai aur fir vaapas chali jaati hain. Aap bhi gyan saagar parampita parmaatma ke bachhe ho, aap is saagar se gu n graham karo ki aap ke man men kabhi bhi maya ki lahar oothen to aap bhi aise hi vapas lauta diya karo. Fir baba kahte bachche, dekho, log saagar men kachra athva kooda daalte hain to vah saagar ke andar nahi jaata balki lahron ke saath baahar aakar ek kinaare par lag jaata hai. To is sagar ki tarah aapka bhi swabhaav hona chaahiye. Aap bachchon ke man men andar koi kichda nahin thaharna chaahiye. Jaise saagar men jab gotakhor neeche jaate hain, to vahaan se heere moti ratn adi le aate hain, aise aap bachche bhi vichaar saagar manthan karo. Gyan ki gaharaai me jaao to bahut hi anmol ratn, heere moti milenge. Dekho, saagar men upar bhale kitni bhi lahren hain, parantu neeche vo shaant hota hai. Aap bhi aise shaant aur dhairy vt ho jaao. Saagar ke kinaare pade saligramon ki or ishaara karte hue baba kahte yah dekho paani ki lahron aur chhiton se ghis ghis kar poojaniy saligram ho gaye hain. Aise hi aap bhi kathinaaiyon ko sahan karenge aur gyan saagar ki laharon men lahraayenge to ek din eise hi saaf aur poojaniy arthaat paavan ban jaayenge.

12. Saadgi aur sad vyvhaar:

Baba saadgi ke ek uttam udaaharan the. Ve ek chhotese kamre men rahte the jo puraane dhang ka tha aur uski chhat tin ke chaadaron se bani hui thi. Vahi karma unke vishraaam ka sthaan, bhojan gruh aur chhota kaaryaa l y tatha bachhon ko milne ka sthaan tha. Bistar par safed chaadaren bichhi hui, deewaron par safed choona...n kamre ki koi vishesh saaj sajja thi na koi baahari banaavat. Us kamre men baithkar seva moorti baba ne kitni atmaaon ko ek naya jeewan pradaan kiya. Kitnon ne vahaan baithkar prabhu Milan ka sukh paaya aur ishwar arpit hone ka sankalp liya. N baba ke tan par koi

banaavati shringaar, n baba ke kamre men.Baba kahte, bachche, is ishwariy seva men kisi ek paisa bhi arpit kiya hai, uska vah paisa bhi ek lakh rupye se adhik moolyvaan hai aur vah manushaatmaaon ko paavan banaane tatha unko shanti deneki seva ke liye hai. Use ham apne sukh bhog ke liye kharch nahin kar sakte, vah amaanat men khyaanat hogi. Unhone kabhi kisiko vyaktigat roop se fatkaar, daant-dapat nahin di, balki ve sada sabhi se sukomal, sumadhur, sadbhavna poorn aur samman sahit shabdon se vaarta karte. Unke meethe bol, unki meethi drishti, unke madhur vyvhaar, gyan ki meethi baaten aur meethi muskaan ke kaaran unke niwaas ka naam pada madhuban tapovan.

13. Sneh, sanrakshan aur sahaayata dene men nipun:

Ek maanav atma hote bhi ve an y sabhi manushyon se bhinn the. Unmen pitaapan ka prem tha. Jaise pita apne bachchon ko achcha pad praapt karte dekh harshit hota hai, vaise hi harsh unhe hota tha. Yogy pita ki sada yahi ichcha rahti hai ki uske sabhi bachche suyogy hon aur sada sukhi hon.Eise hi bhaavna baba ki an y sabhi maanav atmaon ke prati rahti thi. Ve sada kahte amuk vats vivaahit hone par bhi pavitr hain, atah ve sanyaasi se bhi aage hain. Koi bachcha achchi tarah ishwariy seva karta to baba kahte yah bachcha baap ke dil takht nasheen hai.Yah to baba se bhi adhik seva karta hai. Yah bachcha an y atmaaon ko gyan samjhaane men baba se bhi adhik hoshiyaar hai.Is tarah doosri atmaaon ko tivr pururshaarth karte dekhkar, athva jeewan men safal hote dekhkar ve khush hote the. Ve praayah vatson ko patr likhkar unka harsh, ulhaas utsaah aur umang badhaate rahte the aur unhe maaarg darshan dekar maya ke kashton se inka sanrakshan karte the. Baba ne har bachche ko sahyog aur sanrakshan dekar unka sneh shivbaba ke saath joda aur alaukik pita ka kartavy nibhaate hue unhone alaukik arthaat adhyaatmik vats ka nata nibhaane ka paath padhaaya.

14. Sabhi men yogyta bharne ki kala:

Vardaan dekar yogy banaana aur iswariy seva men jootaana to Brahma baba ki vishesh kala thi. Kisi ko unhon ne bhavan kala men aisa nipun bana diya ki usne itne bade pandav bhavan, yog bhavan adi ka nirmaan kara daala to kisi

any ko hisaab-kitaab ki kala sikhaakar athva shighr not lene ka vardaan dekar, likhadhikaari athva shighr lipit bana diya. Jo pahle kisi skool ya kolej men us vidya ko nahi padhe the unhe padhe likhon se bhi adhik kushal aur anubhavi bana diya, yah baba ki kamaal thi. Aaj ve vats itne alaukik roop se itni vishaal seva karne men tatpar hain ki unke kaary kushal kala krity ko dekhkar lok aaschary vint hote hain ki kisi kalah kalesh aur jhagde ke bina ve itna vishaal kaary kara raahe hain. Unki sthaai muskaan, unke netron men Shiv baba ki yaad ki jhalak, unke maha vakyaon men madhury aur ruhaaniyat, unke har kadam men log sangrh, itna mahaan hone par bhi unki namrata, vikat parishthiyan saamne aane par bhi unki narbhikta evam nischint ta , unki saatvikta, unka santosh aur unka jhar jhar karta hua prem, unki amit prabhu preeti aur atal nishchay, eisa unka bahu mukhi vyaktitv adviteey tha.

15. Dehaateet banaanewali shaktishaali drishti:

Baba ke netron ki aur dekhne se apne shareer ko bhulneke liye kuch bhi purushaarth karna nahin padta aur eise lagta ki prakaash ki gati se atma ashreery hokar kahin door door aakaash se paar, jyoti ke desh men jaa rahi hai. Yah anubhav jitna bhi sukshm hota tha, utna hi gahra aur oonch paraakaashtha wala hota tha, jo baad men bhi atma ki sthiti ko avayakt banaaye rakhta tha. Is se spasht samjha ja sakta hai ki baba ki yog sthiti kitni paripakv, shaktishaali evam gahan rahi hogi aur swayam kitne dehaateet evam avayakt avastha men rahte honge.

16. Baba ke jeewan men gyan aur prem ka adbhoot mel:

Baba men to gyan ki athaah gahraai thi hi tabhi to unke jeewan men gyan ke ek ajeeb masti jhalakti thi aur tabhi vah sada kahte the ki yah gyan anmol aur avinaashi ratn hain. Ve jis gyan ki baat kahte vah gyan prem poorn tha. Gyan aur prem ka unke jeewan men eisa taal-mel tha ki donon ko alag-alag bataana asambhav sa tha. Jo unke sampark men aaye, unme se koi to kahega ki unke jeewan men prem adhik tha aur any koi kahega ki praarambh men prem ka ashray dekar gyan ki gahraai men le jaane ki koshish karte. Vastav men yah dekhne walon ki drishti ka antar hai aur apni apni jagah donon thik bhi hain. Vaastav men baba ke gyan bol prem ke bina hote hi nahi

the aur unke prem ke bol men sada gyan bhara rahta tha aur prem tatha gyan donon ka lakshy manushaatma ko pavitr aur yogi banaana hi tha.

17. Har paristhiti men Baba ki yaad:

Baba ka Shiv baba se aisa gyan yukt pyaar tha ki ve har sthiti ko nimitt banaakar unki yaad men rahte. Yadi koi samasya saamne aati, to kahte Shiv Baba ko yaad karo tabhi purushaarth men poornata aayegi. Laukik sthool pari sthition ko bhi Baba Shiv Baba ki yaad ke nimitt bana lete. Bas “baba baba” meethe baba hi ki yaad unke man men bani rahti. Jaise, raatri ko do ghanisht dost , chhote baalak, sone ke liye apne apne ghar chale jaate hain aut praat: hote hi fir ek doosre ko uske ghar se bulaakar padhna khelna aadi shooru kar dete hain, aise hi baba, Shiv Baba ke bina rah hi nahin sakte. Ve to poori raat ek doosre se jooda nahin hote, baba kahte main to Baba ke saath hi sota hun. Yah pyar aur yaad ka kitna gahra sambandh hai!

18. Jeewan men adbhut santulan:

Baba ke jeewan men har prakaar ka santulan tha. Ve dehi abhimaani ban ne par to poora jor dete hi the, paruntu, deh ke swaasthy aur uski sambhaal ki avhelna karna nahin kahte the. Haan, ve kahte the ki baar baar shaareerik bimaari ki charcha karke apne shwaas vyarth nahin gavaane chahiye, kyon ki, aaj jab ki prakruti tamopradhaan hai, aur hamne agyaan kaal men vikarm bhi kiye hain to rog aur vyaadhiyaan aayengi hi. Ath unhi men man buddhi lagaaye rakhnese to hum Shiv Baba ke yaad ke liye samay nikaal hi nahin paayenge. Ath vay kahte, bachche, dava aur dua donon se kaam lo aur seva ki avastha men bhi yog ko n bhoolo varna deh abhimaan ka sanskaar pakka hota jaayega. Is par bhi vah kahte ki yah shareer muly vaan hai ath ise thik rakho taaki is dwara ishwariy seva bhi kar sako aur yog men bhi vighn n pade, Baba achcha bhojan khaaane ke liye bhi kahte, saath saath yah bhi raay dete ki apne pet paalan ke liye adhik kharcha n karo. Aasaktiyon se mukt raho. Ve bahut pyaar se toli khilaate, piknik karaate, parantu saath saath baazaar ke khan paan se man hata dete aur man ki trushnaon ko bhi shant kar dete. Ve athak reeti se seva karne tatha karm karne men pravrut karte, parantu ve utna

hi dhyaan apni mano shtiti aur apne niji purushaarth par dilaate, tatha albelepan se hone wale nuksaan ke prati bhi saavdhaan karaate.

19. Aatmic drishti aur sarv ke shubh chintak:

Anekaanek, gu no men se saakaar babae men ek mukhy gu n jo ki unke vyktitv men sada jhalakta rahta, unke chaaron or pavitrta bikherte rahta, vaayumandal ko shuddh karta rahta aur logon ke jeewan ko palat deta, vah tha aatmic drishti kon. Baba sada aatmic sthiti men rahte hue sab dehon men atma ko hi dekhte. Baba ki klaas men chhote bachche bhi baithe hote, buddhe bhi upasthit hote, graamin bhi hote aur bade bade nagaron men thaath baath rahnewale vyaktibhi viraajmaan hote, parantu baba sabko aatmic drishti se dekhte. Baba ke dil men kabhi oonch neech, gareeb sahukaar ki bhaavna nahin rahi. Sabko samaan drishti se dekha, samaan pyaar aur satkaar diya.

Baba kisika ashubh athva amangal nahin sochte. Doosron ko bhi vah sada shiksha dete ki n kisi ke akalyaan ki baat socho aur n kabhi mukhse ashubh bolo. Baba itne vishaal hriday wale shubh chintak the ki jin mataaon kanyaaon ko unke laukik sambandhi gyan men aane se rokte. Apkaar, anarth, nyaay aur atyaachaar ka vyvhaar karte unke liye sada baba kahte bachche, unki gyan yog se seva karke unka kalyaan karne ka purushaarth karte raho. Bachche, aap unse ghrina nahin karo. Aap sada unke prati shubh socho. Sabhi ke shubh chintak ban baba raat-raat bhar neend tyaag kar bhi unhe paavan banaane tatha yogyukt karne ke liye, unhe prabhu parichay deneki yojnaayen banaate rahte.

Aise the hamaare meethe meethe pyaare saakaar baba jinki visheshtaaon ka varnan karna to jaise soory ko Deepak dikhaana hai. Hum Brahma vatson ko unke kadamon par kadam rakte sabke liye drishtaant roop ban na hai.

▯ CHCHA- ▯ M SHANTI !